पहल

सुरहा ताल की गाद में जैविक खाद के गुण, उपज बढ़ाने में उपयोगी, खाद के रूप में व्यापारिक इस्तेमाल भी संभव

सुरहा ताल से संवरेंगी जिले के किसानों-बेरोजगारों की तकदीर

पॉजिटिव न्यूज

श्रीमुरली मनोहर टाउन पीजी कॉलेज के छात्रों ने किया शोध

बाढ़ से मिलेगी राहत, सिंचाई के संसाधन बढ़ेंगे

गाद के प्रयोग से कम होगी खेती में लागत

प्रार्थना किया। पठन-पाठन बंद रहा।

वरदान | ताल की दो फीट मिट्टी किसानों के लिए है खुशियों का आधार

सुरहा की तलहटी में है अकूत प्राकृतिक संपदा

बंकेश तिवारी • बलिया

करीब साढ़े किमी के दायरे में फैले नगर से सटे विशाल सुरहा की तलहटी में प्राकृतिक रूप से इतनी संपदा है कि इस पर थोड़ा सा शासकीय ध्यान हो जाए तो यह हजारों, लाखों किसानों के लिए वरदान साबित हो सकती है।

सुरहा के जल में वानस्पतिक पौधों, धान के तने व अन्य जलीय पौधों के सड़ते रहने से इसकी दो फीट तक की मिट्टी पूरी तरह से जैविक खाद बन चुकी है। सुरहा ताल के वे क्षेत्र जो करीब चार महीने तक जलभराव से घिरे रहते हैं उसके ऊपर से दो फीट तक की मिट्टी को ही सीधे खाद व कंपोस्ट की तरह खेतों में प्रयोग किया जा सकता है। इसकी मिट्टी में ही इतनी उर्वरा शक्ति है कि यह किसी भी तरह के खेत को उर्वर व उपजाऊ बनाने में योग्य है। इसकी मिट्टी से मृदा स्वास्थ्य को भी पूरी तरह सुधारा जा सकता है। नगर के टीडी कालेज के कृषि रसायन व मृदा विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डा.अशोक कुमार सिंह के नेतृत्व में एक टीम ने लगातार दो वर्षों तक यहां किए गए अध्ययन में पाया है कि इसकी मिट्टी में प्राकृतिक व जैविक खाद का अकूत भंडार है। इसका शोध पत्र बीते जून में अंतर्राष्ट्रीय जर्नल एग्रो पीडोलॉजी में प्रकाशित भी हो चुका है। यहां की दो फीट की मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा 3.5 फीसद है जो सबसे अधिक है। इसमें उपलब्ध नाइट्रोजन की मात्रा प्रति हेक्टेयर छह सौ किग्रा तक है। इसी प्रकार फास्फोरस प्रति हेक्टेयर 22 किग्रा, पोटेशियम प्रति हेक्टेयर 11 सौ किग्रा तो उपलब्ध गंधक की मात्रा 12 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। इसके अलावा इस खाद युक्त मिट्टी में धनायन विनिमय क्षमता यानी पोषक तत्वों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर बदलने की क्षमता 55 से 60 तक पाई गई है। इतना ही नहीं मिट्टी में सूक्ष्म मातृक पोषक तत्वों की मात्रा मसलन लोहा, जस्ता, तांबा, मैंग्निशियम, मैग्नीज की मात्रा भी गोबर के खाद जैसी है।

प्रकृति का भंडार

- जैविक कार्बन की मात्रा 3.5 फीसद अन्य पोषक तत्व भी भरपूर
- मैग्निशियम, मैग्नीज, फास्फोरस पोटेशियम, गंधक भी पर्याप्त

मिट्टी की जांच करते प्रो.अशोक सिंह

सुरहा मे दो फीट नीचे से जांच के लिए निकाली गई मिट्टी • जागरण

यहां की एक किग्रा मिट्टी में लोहा 21 से 60 मिग्रा, तांबा 12 से 26 मिग्रा, जस्ता 01 से 04 मिग्रा व मैग्नीज 21 से 32 मिग्रा तक मौजूद है। इसके अलावा इसमें बोरान, कैल्सियम, मैग्निशम आदि भी प्रचुर मात्रा में है। इनकी वजह से तलहटी की ऊपरी सतह में सूक्ष्म जीवों की संख्या व उनकी गतिविधियां मिट्टी के गुणों में उत्तरोत्तर वृद्धि करते जा रहे हैं। ऐसे में कृषि विज्ञानियों के अनुसार सरकार यदि ताल के नीचे की दो फीट मिट्टी निकालकर उसे पाउडर के रूप में तैयार कर दे तो इससे अच्छा उर्वरक और कुछ भी नहीं हो सकता है।

दिया जा सकता है व्यवसायिक रूप

इसकी मिट्टी को खाद के तौर पर विकसित करने के लिए इसे व्यवसायिक रूप भी दिया जा सकता है। इसे निकालने के लिए शासन किसी को टेंडर दे सकता तो कोई बड़ी कंपनी इसमें कंपोस्ट मिलाकर इसे और भी परिष्कृत कर सकती है। हालांकि इसकी मिट्टी को निकालकर भी सीधे खेतों में प्रयोग किया जा सकता है। यहां की पूरी मिट्टी निकाली जाए तो यह कई लाख टन होगी। इसमें मंदिरों से निकलने वाले फूल व पूजा के सामान, सब्जी मंडी से खराब सब्जी व छिलके आदि को मिलाकर तैयार जैविक खाद को इस मिट्टी में मिलाकर इसे व्यवसायिक रूप भी दिया जा सकता है। इससे रोजगार बढ़ने के साथ ही सरकारी खजाने में में भी भारी वृद्धि हो सकती है।

प्राकृतिक रूप से तैयार कंपोस्ट है मिट्टी

प्रो. डा.अशोक कुमार सिंह ने कहा कि यह मिट्टी प्राकृतिक रूप से बनाई गई कंपोस्ट है जिसका खेतों में प्रयोग किया जाए तो उस खेत की मिट्टी भौतिक, रासायनिक व जैविक दशा सर्वोत्तम हो जाएगी। यदि पूरे ताल के विशाल क्षेत्र से मिट्टी को 60 सेमी की गहराई तक निकाल लिया जाए तो एक तरफ खेतों के लिए उत्तम खाद मिल जाएगा तो दूसरी ओर दो फीट गहराई बढ़ने से ताल की हजारों क्यूसेक जल धारण की क्षमता भी बढ़ जाएगी।

इससे जहां आसपास के हजारों एकड़ खेतों को जून के महीने में भी सिंचाई के लिए जल मिल जाएगा तो किनारे रहने वाले लोगों को ताल से मछली, धान, कमल के फूल व पत्तों के रूप में रोजगार भी मिलेगा। बड़ी बात है कि इससे ताल का कायाकल्प भी हो जाएगा और इसे पर्यटन के लिहाज से विकसित भी किया जा सकेगा।